

## आजादी का अमृत महोत्सव : विविधता में एकता का परिचय

डॉ. अमिता जैन\*

### सार

किसी राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका महापुरुषों, कवियों, लेखकों, दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, साहित्यकारों, समाजशास्त्रियों, वैज्ञानिकों आदि की होती है। लेकिन उस राष्ट्र की सुरक्षा, एकता, अखंडता और अधुण्य बनाये रखने में सबसे बड़ा हाथ सैनिकों का होता है। लम्बे संघर्ष के बाद हम आजाद हुए। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने, वीरों ने, सिपाहियों ने अपनी कुर्बानी दी। उसके बाद हम 15 अगस्त 1947 को आजाद हुए। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हुए। उस 75 वर्ष में हमारी युवा पीढ़ी उन शहीदों को याद कर सकें, उनके योगदान को स्मरण कर सकें, जिनके कारण आज हम स्वतंत्र रहकर अपना विकास कर रहे हैं। हमें उन स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तित्व, जीवन वृत्त, उनके उद्घोषों, उनके प्रेरक प्रसंग व घटनाओं, अवदान और कार्यशैली से सीखने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। उनके जीवन की लम्बी कहानियाँ हैं, उन कहानियों में से हमें उनका संस्मरण करना चाहिए। जिससे हम अपना, परिवार, समाज, देश का विकास कर सकें। इस विचार को लेकर यह आलेख लिखा गया है।

**शब्दकोश :** आजादी, नारे, कार्यक्रम एवं उपलब्धि।

### प्रस्तावना

आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर संपूर्ण देश में आजादी का महोत्सव मनाने की शुरुआत 12 मार्च 2021 शुक्रवार से हुई। इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से की। 'एको सत विप्रा बहुधा वदन्ति' जैसे सूत्र देने वाले लोग भारत में आजादी का अमृत महोत्सव भी विविधता में एकता का परिचय दे रहे हैं। हम संवैधानिक, वैधानिक न्यायप्रक्रिया से कार्य करते रहे हैं। एक विराट देश की स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ मनाना गौरव और सौरभ की बात है। स्वतंत्रता पाने के लिए बहुत लंबा संग्राम हमने लड़ा है। लाखों लोगों ने प्राण आहुति दी, जेलों में यातनाएं सही, अनगणित कष्ट सहे। इसलिए हम सभी का दायित्व बनता है कि उस इतिहास को हम सभी भली-भांति जाने। स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरक कहानियाँ पढ़ें, दूसरों को भी सुनाएं और अच्छी बातों को ग्रहण करें। लोकमान्य तिलक ने अपने उद्घोष में स्वतंत्रता की चेतना जगाई और ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के उद्घोषों ने ब्रिटिश शासकों को डूबते सूर्य की भांति लाकर रख दिया। यह जनशक्ति, जनचेतना, जन विद्रोह का परिणाम था, जो अंग्रेज भारत छोड़कर गए।

\* सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, नागौर, राजस्थान।

### आजादी का अमृत महोत्सव के उद्देश्य

- वैश्विक स्तर पर पहुंच को व्यापक बनाना।
- जनभागीदारी से राष्ट्र का विकास अग्रसरित करना।

### आजादी से पूर्व स्थिति

अंग्रेजों ने भारत में 90 प्रतिशत आबादी और 90 प्रतिशत निरक्षरता रखने का प्रयास किया। उन अंग्रेजों की सत्ता को स्वतंत्रता सेनानियों ने खत्म किया। कुटीर उद्योग विनाश की ओर धकेल दिए। उन सभी से हम अब बाहर निकल कर आए हैं। आजाद हिंद फौज की वीरता और सफलताएं एक नया अध्याय जोड़ती है। शहीदों का बलिदान गाथा हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बननी चाहिए। 75 वर्ष में हमने क्या खोया और क्या पाया। इस पर विचार करना आवश्यक है। जिसे हमने नहीं पाया, उसे पाने के लिए संकल्पबद्ध होना होगा। गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से निकाली दांडी यात्रा 386 किलोमीटर की इस यात्रा में 81 पदयात्री साबरमती आश्रम से दांडी तक शामिल हुए। अब यह राजमार्ग 228 किलोमीटर का है। गांधी जी की दांडी यात्रा सबसे छोटा राजमार्ग है। दांडीयात्रा ने स्वाधीनता संग्राम में आत्मविश्वास की नई ऊर्जा भर दी थी। हथियारों के स्थान पर अहिंसा और सत्य से अंग्रेजों को देश से बाहर किया। 12 मार्च से 5 अप्रैल तक यह कार्यक्रम साबरमती आश्रम में चला। 25 दिन में गांधी जी दांडी पहुंचे। 6 मार्च 1930 को (कराडी गांव में दांडी से थोड़ा पहले) नमक बनाकर ब्रितानवी कानून तोड़कर ब्रितानवी साम्राज्यवाद सत्ता को चुनौती दी। मूलवस्तु नमक के उत्पादन की बिक्री पर भारी कर लगाया। उसका विरोध गांधीजी ने अहिंसक तरीके से किया। यह आंदोलन एक वर्ष चला। चेतना को सघन बनाना, अनुभूतियों तथा भावनाओं को उभारना, स्वस्थ, समर्थ व शिक्षा को सशक्त बनाना, समानता, लोकतंत्र व संवैधानिक मूल्यों को मजबूती प्रदान करना, सामाजिक कुशलता में दक्ष, शिक्षा को सभी लोगों तक पहुंचाना, मुक्त कामी शिक्षा 15 से 30 वर्ष के अशिक्षित व वयस्कों को शिक्षा देना। ढाणी, ग्रामीण, तहसील, जिला, राज्य, केंद्र स्तर तक विकास किया है। समाज सीढीदार ढांचे से दूर रहे। समाज में जिस जाति का दर्जा जितना अधिक होता है, उसके अधिकार उतने अधिक होते हैं। जिस जाति का दर्जा नीचे होता है, तो अधिकार उतने कम होते हैं। सामाजिक एकता, समरसता आदि के माध्यम से शिक्षा से वर्गहीन, शोषणहीन, सहयोगी समाज की रचना संभव।

### आजादी का अमृत महोत्सव पर कार्यक्रम एवं उपलब्धि

2047 को शताब्दी संकल्प के रूप में मनाना, इस महोत्सव में 75 सप्ताहों तक 75 कार्यक्रमों का आयोजन किया, 2022 के स्वतंत्रता दिवस पर 75 वर्ष पूर्ण हुए। आजादी का अमृत महोत्सव अर्थात् 75 वें वर्ष में स्वतंत्रता के बाद प्रवेश किया है, शिक्षा व मूल्य में हम दिशा दे रहे हैं। युवा वर्ग को आधुनिक बनाया है। युवा नवीनता चाहता है, कोरोना में ऑनलाइन को स्वीकार किया है, स्वयं पाठ्यक्रम, दीक्षा पाठ्यक्रम, ओलंपिक में युवाओं ने झंडा पहनाया, आर्टिफिशियल के क्षेत्र बढ़ावा, डिजिटल को गति देना, गाँव व शहर को डिजिटल से जोड़ा, दबाव से मुक्त करना, युवा अपने हिसाब से पढ़ने पर बल, मल्टीडिसिप्लिनरी कोर्स प्रदान करना, विदेशों से छात्र-छात्राएं आना, स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करना। हम गरीबी, अशिक्षा, लघु उद्योगों का क्षरण, स्वास्थ्य के लिए झाड़फूक, सीमित अस्पताल आदि से निजात पाने में काफी अग्रसर रहे। नई छवि गढ़ने वाला भारत हम बनाने जा रहे हैं। शिक्षा की नीति, तकनीकी, हथियारों, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि सभी में तेजी से परिवर्तन हुआ है। परनिर्भर से हम आत्मनिर्भर की ओर बढ़ रहे हैं। भारत ने दूसरे देशों की श्रेष्ठ बातें लेकर अपना संविधान बनाया जो आज तक भारतीयों का संरक्षण संपोषक बना हुआ है। व्यक्ति की सुरक्षा की दृष्टि से महिला आयोग, मानवाधिकार आयोग, बाल अधिकार आयोग जैसे संस्थानों की स्थापना की जिससे भारत का संविधान निरंतर गति शक्ति पाता रहा है।

### प्रसिद्ध नारे

स्वतंत्रता संग्राम में कई स्वतंत्रता सेनानी शहीद हुए थे। उन्होंने आजादी के समय कई ऐसे नारे दिए जिसे सुनकर आज भी पूरे शरीर में जोश भर जाता है। देश के प्रति कुछ कर गुजरने का जज्बा आ जाता है। उनमें से कुछ प्रसिद्ध नारे और उनके प्रवर्तक इस प्रकार हैं—

क्रम सं.	प्रसिद्ध नारे	प्रवर्तक
1	भारत छोड़ो	महात्मा गांधी
2	जय जवान, जय किसान	लाल बहादुर शास्त्री
3	वंदे मातरम –वंदे मातरम	बकिम चंद्र चट्टोपाध्याय
4	स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा	बाल गंगाधर तिलक
5	तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा	सुभाष चंद्र बोस
6	जय हिन्द	सुभाष चंद्र बोस
7	सत्यमेव जयते पंडित मदन	मोहन मालवीय
8	इंकलाब जिंदाबाद– इंकलाब जिंदाबाद	भगत सिंह के साथ हसरत मोहानी
9	सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है	रामप्रसाद बिस्मिल
10	दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे	चंद्रशेखर आजाद
11	आराम हराम है	जवाहरलाल नेहरू
12	तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा	नेताजी सुभाष चंद्र बोस
13	करो या मरो	महात्मा गांधी
14	साइमन कमीशन वापस जाओ	लाला लाजपत राय
15	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा	श्यामलाल गुप्ता
16	सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा	मोहम्मद इकबाल
17	जन गण मन अधिनायक जय हे	रविंद्रनाथ टैगोर

### निष्कर्ष

हर घर तिरंगे का मान और सम्मान करना चाहिए। उन वीरों, शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तित्व, जीवन वृत्त, उनके उद्घोषों, उनके प्रेरक प्रसंग व घटनाओं, अवदान का संरक्षण, संवर्धन और संप्रसारण करना चाहिए। आजादी के बाद हमने क्या खोया और क्या पाया, क्या सफलता हासिल की क्या नहीं कर पाए। देश की रक्षा और सुरक्षा के लिए हमारी क्या योजनाएं हैं। देश के विकास में हमें और क्या करना चाहिए। लोकतंत्र को सशक्त और मजबूत बनाने के लिए हमें और क्या करना चाहिए। देश की एकता, अखंडता और संस्कृति की नींव को और कैसे सशक्त करे। उक्त विषयों पर सदैव चिन्तन करना चाहिए, समय-समय पर समीक्षा करने से देश का विकास होता है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विनोद कुमार (संपादन).(2006 चतुर्थ संस्करण) भारत के गौरव भाग-1. प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
2. विनोद कुमार (संपादन).(2006 पंचम संस्करण) भारत के गौरव भाग-2.प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
3. विनोद कुमार (संपादन).(2006 चतुर्थ संस्करण) भारत के गौरव भाग-3.प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
4. राजस्थान पत्रिका.14.08.2022

